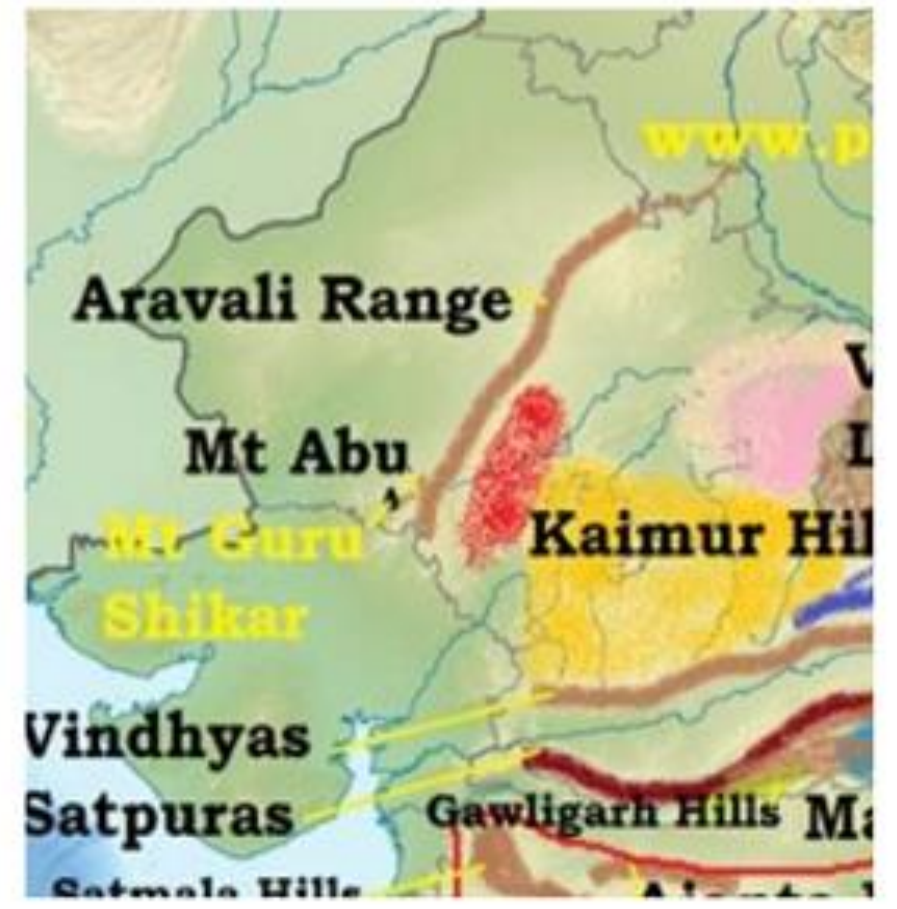


CENTRAL HIGHLAND



ARAWALI RANGE

Aravalli is a mountain range located in the western part of India, Rajasthan. Aravalli is the oldest mountain in the geographical structure of India. It is the oldest mountain range in the world, which divides Rajasthan from north to south in two parts. The highest mountain peak of Aravali is Gurushkhat (1722/1727 m) in Sirohi district, which is in Mount Abu (Sirohi). The Bhil tribe has lived in the vicinity of the Aravalli ranges for centuries.

The estimated age of the Aravalli mountain range is 570 million years. This is an example of a residual mountain with a total length of about 692 km from Gujarat to Delhi, about 40% of the Aravali mountain range is in Rajasthan, Rashtrapati Bhavan located in Delhi on the Raisina hill. It is a part of the Aravalli mountain range, the average elevation of Aravalli is 930 meters and the height and width of the south of Aravali is the highest, Aravalli or Aravali is the north Indian ranges. Some rocky hills of this mountain covering 550 kilometers, passing through the northeastern region of the state of Rajasthan, have gone to the south part of Delhi. The ranges of peaks and cuttings, which span 10 to 100 kilometers, are generally 300 to 900 meters high. This range is divided into two parts - the Sambhar-Sirohi ranges - which consists mostly of high mountains including Guru Shikhar (peak of Aravalli ranges, in height (1,722 m) and (5649.606 ft) of Mount Abu). There are different cutaneous areas. The Aravalli range is full of natural resources (and minerals) and acts to prevent the expansion of the western desert. The western part of the Aravalli mountain is called Marwar and the eastern part is called Mewar. There are several major rivers - Banas, Luni. , Is the point of origin of Sakhi and Sabarmati. This range has dense forests only in the southern region, otherwise in most areas it is sparse, sandy and rocky (pink colored pink).

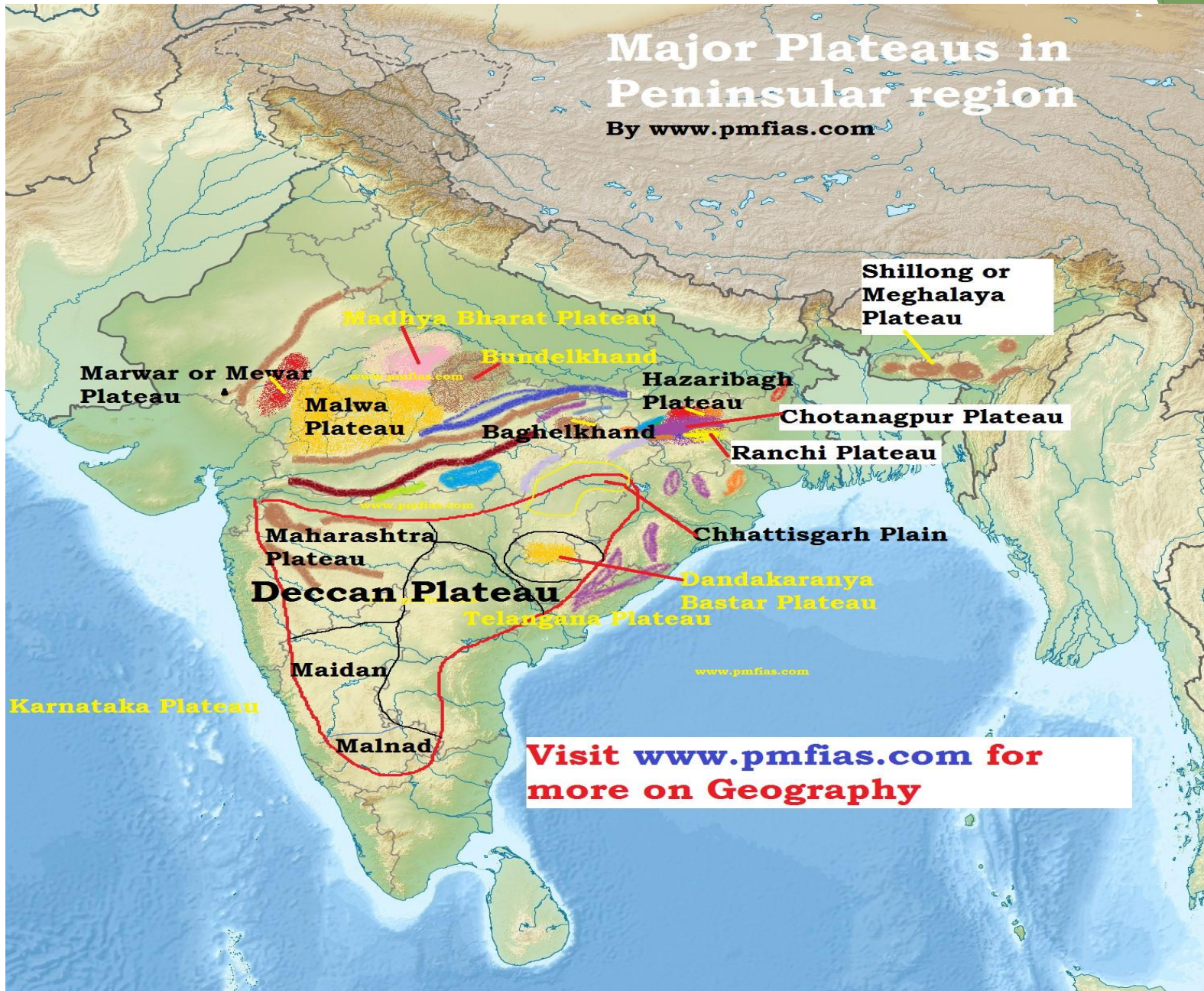
अरावली श्रेणी

अरावली भारत के पश्चिमी भाग राजस्थान में स्थित एक पर्वतमाला है। भारत की भौगोलिक संरचना में अरावली प्राचीनतम पर्वत है। यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है जो राजस्थान को उत्तर से दक्षिण दो भागों में बांटती है। अरावली का सर्वोच्च पर्वत शिखर सिरोही जिले में गुरुशिखर (1722 /1727 मी.) है, जो माउंट आबू(सिरोही) में है। अरावली पर्वतमाला के आस - पास सदियों से भील जनजाति निवास करती रही है।

अरावली पर्वत श्रृंखला की अनुमानित आयु 570 मिलियन वर्ष है यह एक अवशिष्ट पर्वत का उदाहरण है जिसकी कुल लम्बाई गुजरात से दिल्ली तक लगभग 692 किलोमीटर है, अरावली पर्वत श्रृंखला का लगभग ८० % विस्तार राजस्थान में है, दिल्ली में स्थित राष्ट्रपति भवन रायसीना की पहाड़ी पर बना हुआ है जो अरावली पर्वत श्रृंखला का ही भाग है, अरावली की औसत ऊंचाई ९३० मीटर है तथा अरावली के दक्षिण की ऊंचाई व चौड़ाई सर्वाधिक है, अरावली या अर्वली उत्तर भारतीय पर्वतमाला है। राजस्थान राज्य के पूर्वोत्तर क्षेत्र से गुजरती 550 किलोमीटर लम्बी इस पर्वतमाला की कुछ चट्टानी पहाड़ियाँ दिल्ली के दक्षिण हिस्से तक चली गई हैं। शिखरों एवं कटकों की श्रृंखलाएँ, जिनका फैलाव 10 से 100 किलोमीटर है, सामान्यतः 300 से 900 मीटर ऊँची हैं। यह पर्वतमाला, दो भागों में विभाजित है- सांभर-सिरोही पर्वतमाला- जिसमें माउण्ट आबू के गुरु शिखर (अरावली पर्वतमाला का शिखर, ऊँचाई (1,722 मीटर) में और (5649.606 फीट) सहित अधिकतर ऊँचे पर्वत हैं। सांभर-खेतरी पर्वतमाला- जिसमें तीन विच्छिन्न कटकीय क्षेत्र आते हैं। अरावली पर्वतमाला प्राकृतिक संसाधनों (एवं खनिज) से परिपूर्ण है और पश्चिमी मरुस्थल के विस्तार को रोकने का कार्य करती है। अरावली पर्वत का पश्चिमी भाग मारवाड़ एवं पूर्वी भाग मेवाड़ कहलाता है। यहां अनेक प्रमुख नदियों- बनास, लूनी, साखी एवं साबरमती का उदगम स्थल है। इस पर्वतमाला में केवल दक्षिणी क्षेत्र में सघन वन हैं, अन्यथा अधिकांश क्षेत्रों में यह विरल, रेतीली एवं पथरीली (गुलाबी रंग के स्फटिक) है।

Major Plateaus in Peninsular region

By www.pmfias.com



Visit www.pmfias.com for more on Geography

MEWAR PLATEAU

- ▶ It is the plateau of eastern Rajasthan. [Marwar plain is to the west of Aravalis whereas Marwar plateau is to the east].
- ▶ The average elevation is 250-500 m above sea level and it slopes down eastwards.
- ▶ It is made up of sandstone, shales and limestones of the Vindhayan period.
- ▶ The **Banas river**, along with its tributaries [**Berach river, Khari rivers**] originate in the Aravali Range and flow towards northwest into **Chambal river**. The erosional activity of these rivers make the plateau top appear like a **rolling plain**.

यह पूर्वी राजस्थान का पठार है। [मारवाड़ का मैदान अरावली के पश्चिम में है जबकि मारवाड़ का पठार पूर्व में है]। समुद्र तल से औसत ऊंचाई 250-500 मीटर है और यह पूर्व की ओर ढलान है। यह विंध्य काल के बलुआ पत्थर, शैल्स और लिमस्टोन से बना है। बनास नदी अपनी सहायक नदियों [बेरच नदी, खारी नदियों] के साथ अरावली रेंज में निकलती है और उत्तर पश्चिम की ओर चंबल नदी में प्रवाहित होती है। इन किरणों की क्षणिक गतिविधि पठार के शीर्ष को एक रोलिंग मैदान की तरह दिखाई देती है।

MALWA PLATEAU

The Malwa plateau is a triangular plateau at the base of the Vindhya hills. It is a lava plateau. To its east lies Budenlkhand and to the north west the Aravalli hills. Its slope is towards the northeast. The rivers here are Chambal, Kali Sindh, Betwa, Cane etc. On the southern side of this plateau is the Deccan plateau, which is quite torn. To the north lies the Kachari deposit of rivers and the Khadar region of the Yamuna. The plateau of Malwa is divided according to the physical design into the Arya Vindhya of North and the Deccan Lava Plateau to the south. There are teak forests on the Vindhya hills, villages and towns are inhabited by common high areas. This plateau receives up to 25 inches of rainfall, but rainfall is erratic. In addition to jowar, wheat, gram and oilseeds, cotton is produced on the black regar land of lava. Indore, Gwalior, Lashkar, Bhopal and Ujjain are famous cities here.

मालवा का पठार विंध्य पहाड़ियों के आधार पर त्रिभुजाकार पठार है। यह एक लावा पठार है। इसके पूर्व में बुंदेलखंड और उत्तर पश्चिम में अरावली पहाड़ियाँ स्थित हैं। इसकी ढाल उत्तर पूर्व की ओर है। यहाँ की नदियाँ चंबल, काली सिंध, बेतवा, केन आदि हैं। इस पठार के दक्षिणी ओर दकन का पठार है, जो काफी कटा फटा है। उत्तर में नदियों के कछारी निक्षेप तथा यमुना के खादर क्षेत्र स्थित हैं। मालवा का पठार भौतिक बनावट के अनुसार उत्तर की ओर विंध्य उच्छृंग तथा दक्षिण की ओर की दकन लावा के पठार में विभाजित है। विंध्य पहाड़ियों पर सागौन के वन हैं, सामान्य ऊँचे क्षेत्रों में गाँव तथा नगर बसे हैं। इस पठार में 25 इंच तक वर्षा होती है, पर वर्षा अनिश्चित है। ज्वार, गेहूँ, चना तथा तिलहन के अतिरिक्त लावा की काली रेगर भूमि पर कपास पैदा होती है। इंदौर, ग्वालियर, लशकर, भोपाल तथा उज्जैन यहाँ के प्रसिद्ध नगर हैं।

BUNDELKHAND PLATEAU

Bundelkhand plateau is of Precambrian age. The stone is made up of volcanic, sloping and rocky rocks. There is an abundance of nice and granite in it. The height of this plateau is 150 meters to the north and 400 meters to the south. It also has area in small hills, its gradient is from south to north and north east. The Bundelkhand plateau is spread in the districts of Tikamgarh, Chhatarpur, Datia, Gwalior and Shivpuri in Madhya Pradesh. Siddhababa hill (1722 m) is the tallest mountain in this region. According to the geographical design of Bundelkhand, Jhansi, Lalitpur, Mahoba, Chitrakoot-Banda, Datia, Panna and Sagar districts of Vindhya region are predominantly for varieties with pink, red and brown granite. Heavy blocks and black granite are found in Sagar and parts of Panna, a variety of which is called Jhansi Red. The stone found under mining in Chhatarpur is called Fortune Lal. White, leather, cream, red sandstone are found in layers of different hills. The minimum layer sandstone can be easily carved for an excellent building material. Apart from this, large deposits, light colored stones are found in Jhansi, Lalitpur, Mahoba, Tikamgarh and parts of Chhatarpur. This material store is used for 80 percent ornamental items throughout the country. Known in Lalitpur as low grade and iron ore (rock phosphate).

बुन्देलखण्ड का पठार प्रीकेम्बियन युग का है। पत्थर ज्वालामुखी पर्तदार और रवेदार चट्टानों से बना है। इसमें नीस और ग्रेनाइट की अधिकता पायी जाती है। इस पठार की समुद्र तल से ऊंचाई 150 मीटर उत्तर में और दक्षिण में 400 मीटर है। छोटी पहाड़ियों में भी इसका क्षेत्र है, इसका ढाल दक्षिण से उत्तर और उत्तर पूर्व की ओर है। बुन्देलखण्ड का पठार मध्यप्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर, दतिया, ग्वालियर तथा शिवपुरी जिलो में विस्तृत है। सिद्धबाबा पहाड़ी (1722 मीटर) इस प्रदेश की सबसे ऊंची पर्वत छोटी है। बुन्देलखण्ड की भौगोलिक बनावट के अनुरूप गुलाबी, लाल और भरे रंग के ग्रेनाइट के बड़ाबीज वाला किस्मों के लिये विन्ध्य क्षेत्र के जनपद झांसी, ललितपुर, महोबा, चित्रकूट- बांदा, दतिया, पन्ना और सागर जिले प्रमुखतः हैं। भारी ब्लाकों व काले ग्रेनाइट सागर और पन्ना के कुछ हिस्सों में पाये जाते हैं इसकी एक किस्म को झांसी रेड कहा जाता है। छतरपुर में खनन के अन्तर्गत पाये जाने वाले पत्थर को फाच्यून लाल बुलाया जाता है। सफेद, चमड़ा, क्रीम, लाल बलुआ पत्थर अलग-अलग पहाड़ियों की परतों में मिलते हैं। न्यूनतम परत बलुवा पत्थर एक उत्कृष्ट निर्माण सामग्री के लिये आसानी से तराशा जा सकता है। इसके अतिरिक्त बड़े भंडार, हल्के रंग का पत्थर झांसी, ललितपुर, महोबा, टीकमगढ़ तथा छतरपुर के कुछ हिस्सों में मिलता है। इस सामग्री भण्डार का उपयोग पूरे देश में 80 प्रतिशत सजावटी समान के लिये होता है। ललितपुर में पाया जाना वाला कम ग्रेड व लौह अयस्क (राक फास्फेट) के रूप से विख्यात है।

Chota Nagpur, plateau in eastern India, in northwestern Chhattisgarh and central Jharkhand states. The plateau is composed of Precambrian rocks (i.e., rocks more than about 540 million years old). Chota Nagpur is the collective name for the Ranchi, Hazaribagh, and Kodarma plateaus, which collectively have an area of 25,293 square miles (65,509 square km). Its largest division is the Ranchi Plateau, which has an average elevation of about 2,300 feet (700 metres). The Chota Nagpur plateau in its entirety lies between the basins of the Ganges (Ganga) and Son rivers to the north and the Mahanadi River to the south. Through its centre, from west to east, runs the coal-bearing, faulted Damodar River valley. Numerous streams have dissected the uplands into a peneplain (an area reduced almost to a plain by erosion) with isolated hills.

छोटा नागपुर, पूर्वी भारत में पठार, पश्चिमोत्तर छत्तीसगढ़ और मध्य झारखंड राज्यों में। पठार Precambrian चट्टानों से बना है (यानी, लगभग 540 मिलियन वर्ष से अधिक पुरानी चट्टानें)। छोटा नागपुर रांची, हजारीबाग और कोडरमा पठार का सामूहिक नाम है, जिसका सामूहिक रूप से 25,293 वर्ग मील (65,509 वर्ग किमी) का क्षेत्रफल है। इसका सबसे बड़ा डिवीजन रांची पठार है, जिसकी औसत ऊंचाई लगभग 2,300 फीट (700 मीटर) है। छोटा नागपुर पठार अपनी संपूर्णता में गंगा (गंगा) और उत्तर में सोन नदियों और दक्षिण में महानदी नदी के घाटों के बीच स्थित है। इसके केंद्र के माध्यम से, पश्चिम से पूर्व तक, कोयला-असर, दोषपूर्ण दामोदर नदी घाटी चलाता है। अलग-अलग पहाड़ियों के साथ कई धाराओं ने अपलैंड्स को एक पेनप्लेन (एक क्षेत्र जो कटाव से लगभग कम हो गया है) में विच्छेदित कर दिया है।

RAJMAHAL HILLS

The Rajmahal Hills are located in the Santhal Pargana division of Jharkhand, India. They were located on the northern margin of the Gondwana supercontinent, and its hills are today inhabited by the Sauria Paharia people whilst its valleys are dominated by the Santhal people.

[1] The hills span over an area of 2,600 km² (1,000 sq mi).

[2] Volcanic activity during the Jurassic resulted in the formation of the Rajmahal Traps. The hills are approximately located at 25° N 87° E.

[3] The Rajmahal hills are named after the town of Rajmahal which lies in the eastern Jharkhand. The hills trend north-south with an average elevation of 200-300 m (660-980 ft), from the Sahibganj district to the Dumka district. The River Ganges wanders around the hills changing the direction of flow from east to south.

राजमहल हिल्स भारत के झारखंड के संथाल परगना डिवीजन में स्थित है। वे गोंडवाना सुपरकॉन्टिनेंट के उत्तरी छोर पर स्थित थे, और इसकी पहाड़ियों में आज सौरिया पहाड़िया लोगों का निवास है, जबकि इसकी घाटियों में संथाल लोगों का दबदबा है। [१] पहाड़ियों का क्षेत्रफल 2,600 किमी² (1,000 वर्ग मील) है। [2]

जुरासिक के दौरान ज्वालामुखीय गतिविधि के परिणामस्वरूप राजमहल जाल का निर्माण हुआ। पहाड़ियाँ लगभग 25 ° N 87 ° E पर स्थित हैं। [3]

राजमहल पहाड़ियों का नाम राजमहल शहर के नाम पर रखा गया है जो पूर्वी झारखंड में स्थित है। साहिबगंज जिले से दुमका जिले तक 200-300 मीटर (660-980 फीट) की औसत ऊंचाई के साथ उत्तर-दक्षिण में पहाड़ियों का चलन है। गंगा नदी पूर्व से दक्षिण की ओर प्रवाह की दिशा बदलते हुए पहाड़ियों के चारों ओर घूमती है।

MEHALAYA PLATEAU

Meghalaya plateau or Karbi- Meghalaya plateau is a part of the Deccan plateau of the southern peninsular plateau region. Situated in Northeast India covering the whole Indian state of Meghalaya and Karbianglong district of Assam.

The hard crystalline massif formation the core of the region is, in fact, an extension of the Deccan Plateau. The latter extends underground from the Rajmahal hills of Chotanagpur Plateau below Malda districts of West Bengal and Rajshahi, Dinajpur and Rangpur districts of Bangladesh and appears in Northeast above the surface as Meghalaya Plateau and Karbi Plateau or Mikir Hills.

मेघालय पठार या कार्बी- मेघालय पठार दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र के देक्कन पठार का एक हिस्सा है। पूर्वोत्तर भारत में स्थित है जो मेघालय और असम के कारबियांगलांग जिले के पूरे भारतीय राज्य को कवर करता है।

वास्तव में कठोर क्रिस्टलीय द्रव्यमान का गठन क्षेत्र का मूल है, वास्तव में, डेक्कन पठार का विस्तार। उत्तर पश्चिम बंगाल के मालदा जिलों के नीचे छोटानागपुर पठार की राजमहल पहाड़ियों और बांग्लादेश के राजशाही, दिनाजपुर और रंगपुर जिलों से भूमिगत फैली हुई है और पूर्वोत्तर में मेघालय पठार और कार्बी पठार या मिकिर पहाड़ियों के रूप में सतह से ऊपर दिखाई देती है।

VINDHYAN RANGE

These are non-tectonic mountains; they were formed not because of plate collision but because of the downward faulting of the Narmada Rift Valley (NRV) to their south. They extend for 1200km from Bharuch in Gujarat to Sasaram in Bihar. Geologically, they are younger than Aravallis and Satpura hills. Their average height is in the range of 300-650m. They are made up of older Proterozoic rocks. They are cut across by Kimberlitic piles (diamond deposits) They are known by local names such as Panna, Kaimur, and Rewa etc. They rise from the NRV in the form of steep, sharp slopes called the escarpments. These escarpments are well developed in Kaimur and Panna regions.

Satpura range

ये गैर-टेक्टोनिक पर्वत हैं; वे प्लेट के टकराने के कारण नहीं बल्कि नर्मदा रिफ्ट वैली (NRV) के नीचे की ओर फेल होने के कारण बने थे।

वे गुजरात के भरुच से बिहार के सासाराम तक 1200 किमी तक फैले हैं।

भूवैज्ञानिक रूप से, वे अरावली और सतपुड़ा पहाड़ियों से छोटे हैं।

उनकी औसत ऊंचाई 300-650 मीटर की सीमा में है।

वे पुराने प्रोटेरोज़ोइक चट्टानों से बने होते हैं। वे किम्बरलिटिक पाइल्स (हीरे की जमा राशि) से कटे हुए हैं

उन्हें स्थानीय नामों से जाना जाता है जैसे पन्ना, कैमूर और रीवा आदि।

वे खड़ी, तेज ढलान के रूप में NRV से उठते हैं जिन्हें एस्केरपमेंट कहा जाता है। कैमूर और पन्ना क्षेत्रों में इन एस्केरपमेंटों को अच्छी तरह से विकसित किया गया है।

- Satpura range is a combination of Satpura, Mahadeo, and Maikala hills.
- Satpura hills are tectonic mountains, formed about 1.6 billion years ago, as a result of folding and structural uplift. They are a Horst landform.
- They run for a distance of about 900km.
- Mahadeo hills lie to the east of Satpura hills. Pachmarhi is the highest point of the Satpura range. Dhupgarh (1350m) is the highest peak of Pachmarhi.
- Maikala hills lie to the east of Mahadeo hills. Amarkantak plateau is a part of the Maikala hills. It is about 1127m.
- The plateau has the drainage systems of Narmada and Son; hence it has drainage into the Bay of Bengal as well as Arabian sea.
- These are mostly situated in the States of Madhya Pradesh and Chhattisgarh.
- These hills are rich in bauxite, due to the presence of Gondwana rocks.
- Dhuandhar waterfalls over the Narmada is situated MP.

सतपुड़ा श्रेणी सतपुड़ा, महादेव और माईकाला पहाड़ियों का एक संयोजन है।

सतपुड़ा पहाड़ियाँ टेक्टोनिक पर्वत हैं, जो कि लगभग 1.6 बिलियन वर्ष पहले तह और संरचनात्मक उत्थान के परिणामस्वरूप बनी थीं। वे एक हॉस्ट लैंडफॉर्म हैं।

वे लगभग 900 किमी की दूरी तक चलते हैं।

महादेव पहाड़ियाँ सतपुड़ा पहाड़ियों के पूर्व में स्थित हैं। पचमढ़ी सतपुड़ा श्रेणी का सर्वोच्च बिंदु है। धुपगढ़ (१३५० मी) पचमढ़ी की सबसे ऊँची चोटी है।

मायका पहाड़ियाँ महादेव पहाड़ियों के पूर्व में स्थित हैं। अमरकंटक का पठार माईकाला पहाड़ियों का एक हिस्सा है। यह लगभग 1127 मी। पठार में नर्मदा और सोन की जल निकासी प्रणालियाँ हैं; इसलिए यह बंगाल की खाड़ी में और साथ ही अरब सागर में जल निकासी है।

ये ज्यादातर मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों में स्थित हैं।

गोंडवाना चट्टानों की उपस्थिति के कारण ये पहाड़ियाँ बॉक्साइट से समृद्ध हैं।

नर्मदा के ऊपर धूंधर झरना MP स्थित है।

DECCAN PLATEAU

The Deccan Plateau is a triangular landmass that lies to the south of the river Narmada. The Deccan Plateau is triangular landmass that lies to the south of the river Narmada.

(2) The Satpura range flanks its broad Base in the north while the Mahadev, the Kaimur hills and the Maikal range form its Eastward extension.

(3) It is higher in the West and Slopes gently eastwards.

(4) Its north - east extension is locally known as the Meghalaya and Karbi-Anglong Plateau and North Cachar hills. It is separated from Chota Nagpur plateau.

(5) Three prominent hill ranges from the West to East are the Garo, Khasi and Jaintia hills.

दक्कन का पठार एक त्रिकोणीय भूभाग है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है। दक्कन का पठार त्रिकोणीय भू-भाग है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है।

(२) सतपुड़ा श्रेणी उत्तर में व्यापक आधार है, जबकि महादेव, कैमूर की पहाड़ियाँ और माईकल श्रेणी इसका पूर्व की ओर विस्तार है।

(३) यह पश्चिम में अधिक है और ढलान धीरे पूर्व की ओर।

(४) इसका उत्तर - पूर्व विस्तार स्थानीय रूप से मेघालय और कार्बी-एंगलोंग पठार और उत्तरी कछार पहाड़ियों के रूप में जाना जाता है। यह छोटा नागपुर पठार से अलग किया गया है।

(५) पश्चिम से पूर्व की तीन प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएँ गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियाँ हैं।

KARNATKA PLATEAU

- The Karnataka Plateau is also known as the **Mysore plateau**.
- Lies to the south of the Maharashtra plateau.
- The area looks like a rolling plateau with an average elevation of 600-900 m.
- It is highly dissected by numerous rivers rising from the Western Ghats.
- The general trend of the hills is either parallel to the Western Ghats or across it.
- The **highest peak (1913 m) is at Mulangiri in Baba Budan Hills in Chikmagalur district**.
- The plateau is divided into two parts called **Malnad** and **Maidan**.
- The Malnad in Kannada means hill country. It is dissected into deep valleys covered with dense forests.
- The Maidan on the other hand is formed of rolling plain with low granite hills.
- The plateau tapers between the Western Ghats and the Eastern Ghats in the south and merges with the **Niligiri hills** there.

कर्नाटक पठार को मैसूर पठार के रूप में भी जाना जाता है।

महाराष्ट्र पठार के दक्षिण में स्थित है।

यह क्षेत्र 600-900 मीटर की औसत ऊंचाई के साथ रोलिंग पठार जैसा दिखता है।

यह पश्चिमी घाट से उठने वाली कई नदियों द्वारा अत्यधिक विच्छेदित है।

पहाड़ियों की सामान्य प्रवृत्ति या तो पश्चिमी घाट के समानांतर है या इसके पार है।

सबसे ऊंची चोटी (1913 मीटर) चिकमगलूर जिले के बाबा बुदन हिल्स में मूलगिरि में है।

पठार को दो भागों में विभाजित किया जाता है जिसे मलनाड और मैदान कहा जाता है।

कन्नड़ में मलनाड का मतलब पहाड़ी देश है। यह घने जंगलों से आच्छादित गहरी घाटियों में विच्छेदित है।

दूसरी तरफ मैदान कम ग्रेनाइट पहाड़ियों के साथ रोलिंग मैदान से बना है।

पठार पश्चिमी घाटों और दक्षिण में पूर्वी घाटों के बीच स्थित है और वहाँ नीलगिरी पहाड़ियों के साथ विलय होता है।

SOUTHERN HILLS OF INDIA

Nilgiri Hills

- Referred as Blue mountains, a range of mountains in the westernmost part of Tamil Nadu at the junction of Karnataka and Kerala
- Hills are separated from the Karnataka plateau to the north by the Moyar River and from the Anaimalai Hills & Palni Hills to the south by the Palghat Gap

Anamalai Hills

- Also known as Elephant Hill
- A range of mountains in the Western Ghats in Tamil Nadu and Kerala with highest peak Anamudi

Cardmom Hills

- Part of the southern Western Ghats located in southeast Kerala and southwest Tamil Nadu

Palani Hills

- Eastward extension of the Western Ghats ranges
- adjoin the high Anamalai range on the west, and it is extend east into the plains of Tamil Nadu

नीलगिरी की पहाड़ियाँ

- ब्लू पहाड़ों के रूप में संदर्भित, कर्नाटक और केरल के जंक्शन पर तमिलनाडु के पश्चिमी भाग में पहाड़ों की एक श्रृंखला
- पहाड़ियों को कर्नाटक पठार से उत्तर की ओर मोयार नदी से और अंमिलाई हिल्स और पलनी हिल्स से दक्षिण में पालघाट गैप से अलग किया जाता है।

अनामलाई हिल्स

- जिसे एलीफेंट हिल के नाम से भी जाना जाता है
- यह पश्चिमी घाट की एक पर्वत श्रृंखला है जो तमिलनाडु और केरल की सीमा पर स्थित है इसकी सबसे ऊंची अनाईमुडी चोटी होती है

इलायची की पहाड़ियाँ

- दक्षिणी पश्चिमी घाटों का एक हिस्सा दक्षिण-पूर्व केरल और दक्षिण-पश्चिम तमिलनाडु में स्थित है

पलानी हिल्स

- पश्चिमी घाट पर्वतमाला का पूर्ववर्ती विस्तार
- पश्चिम में ऊंची अनामलाई रेंज से सटा हुआ है, और यह पूर्व में तमिलनाडु के मैदानों में विस्तारित है

